मनोविज्ञान (सामाजिक विज्ञान) में पीएच०डी उपाधि हेतु प्रस्तावित शोध प्रारूप

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, कामेश्वरनगर, दरभंगा, बिहार

–ःशोध का शीर्षकः–

व्यक्तियों के मानसिक स्वास्थ्य, आत्म-विश्वास एवं समायोजन पर पूर्वाग्रह के प्रभाव का अध्ययन

2023

: शोधार्थी :

फरहा नाज

पिता–मो० इंसान अली

मुफ्ती मोहल्ला, लाल पोखर,

शाही मस्जिद के निकट,

दरभंगा–846004

शोध निदेशक का हस्ताक्षर

शोध का शीर्षक :

''व्यक्तियों के मानसिक स्वास्थ्य, आत्म–विश्वास एवं समायोजन पर पूर्वाग्रह के प्रभाव का अध्ययन''

शोध समस्या पर कथन :

भारतीय संस्कृति सभी संस्कृतियों में अति प्राचीन एवं ग्रहणशील संस्कृति है। भारतीय संस्कृति की सर्वप्रधान विशेषता ''अनेकता में एकता'' है। अर्थात् यहाँ विभिन्न धर्मों के भिन्नात्मक अस्तित्व के बावजूद एकता की मिशाल दृष्टिगत होती है। दूसरी तरफ धार्मिक सहिष्णुता, समानता, सह–अस्तित्व, सम्मान की भावना इत्यादि भारतीय संस्कृति की अमूल्य विशेषता है। इन विशेषताओं के बावजूद हमारा भारतीय समाज विभिन्न प्रकार की नकारात्मक भावना एवं प्रवृत्ति से प्रभावित है, जो व्यक्तियों पर मनोवैज्ञानिक प्रभाव डालती हैं।

यहाँ शोधार्थी की मान्यता है कि पूर्वाग्रह हमारे समाज में व्यक्तियों के मनोवैज्ञानिक स्तर एवं जीवन शैली को समस्यात्मक रूप से प्रभावित करती है। अतः इसी चिंतन के आधार पर शोधार्थी द्वारा ''व्यक्तियों के मानसिक स्वास्थ्य, आत्म–विश्वास एवं समायोजन पर पूर्वाग्रह के प्रभाव का अध्ययन'' नामक शीर्षक पर शोध कार्य करने का निर्णय लिया गया है।

परिचय :

पूर्वाग्रह एक व्यापक सामाजिक घटना है, जिसमें लोगों के कुछ समूहों के प्रति पक्षपातपूर्ण दृष्टिकोण और निर्णय शामिल होते हैं। इसका व्यक्तियों एवं समाज पर हानिकारक प्रभाव पड़ता है। साथ ही, पूर्वाग्रह समाज में भेदभाव एवं असमानता लाती है।

पूर्वाग्रह जिसे पूर्व–निर्णय के रूप में जाना जाता है; यह लोगों में किसी समुदाय एवं समूह के प्रति नकारात्मक विश्वासों, भावनाओं एवं व्यवहारों की विशेषता वाली रवैया होती है। इसके अतिरिक्त पूर्वाग्रह में व्यक्ति की सदस्यता के आधार पर रुढ़िवादिता, भेदभावपूर्ण कार्य और पूर्वग्रसित अवधारणाऐं शामिल होती है।

इस तरह, पूर्वाग्रह एक मनोवृत्ति होती है जो व्यक्ति को किसी समूह या उसके सदस्यों के प्रति अनुकूल अथवा प्रतिकूल तरीके से सोचने, प्रत्यक्षण करने, अनुभव एवं क्रिया करने के लिए पहले से हीं तत्पर बना देती है।

मानसिक स्वास्थ्य एक ऐसी अवधारणा है, जो व्यक्ति को मानसिक रूप से स्वास्थ्य की ओर संकेत करती है। शारीरिक स्वास्थ्य की तरह ही मानसिक स्वास्थ्य भी मानवीय जीवन का अहम हिस्सा है। मानसिक स्वास्थ्य व्यक्ति के मानसिक रूप से स्थिर और संतुलित होने की तरफ इंगित करती है।

मानसिक स्वास्थ्य, मानवीय जीवन की गुणवत्ता को बढ़ाता है। व्यक्ति की संवेदनशीलता को बढ़ाता है, जिससे मानसिक रूप से स्वस्थ्य व्यक्ति अन्य

लोगों के साथ बेहतर संबंध बनाने में सक्षम हो पाता है। इस तरह, संतुलित मानसिक स्वास्थ्य मानवीय जीवन की गुणवत्ता को बढ़ाता है और सार्थकता प्रदान करता है।

इस तरह, मानसिक स्वास्थ्य एक महत्त्वपूर्ण विषय है, जो व्यक्ति के जीवन, समुदाय एवं समाज के लिए आवश्यक होता है।

प्रस्तुत शोध में मानसिक स्वास्थ्य को इस चिंतन के आधार पर आश्रित चर के रूप में सम्मिलित किया गया है कि, पूर्वाग्रह (स्वतंत्र चर) व्यक्तियों के मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करती है।

आत्म–विश्वास व्यक्ति के व्यक्तित्व की एक ऐसी विशेषता है, जो जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में आवश्यक होती है। सामान्य रूप से व्यक्ति जब अपने जीवन के जिस क्षेत्र में सफलता के प्रति यदि आश्वस्त होता है और वह सफलता प्राप्त करता है तो उसे आत्म–विश्वास कहेंगे। इस तरह, आत्म–विश्वास एक ऐसा संदर्भ है, जिसके आधार पर व्यक्ति जीवन में सफलता के प्रति आश्वस्त होता है।

प्रस्तुत शोध में आत्म–विश्वास को भी मानसिक स्वास्थ्य की तरह आश्रित चर के रूप में सम्मिलित किया गया है। इस तथ्य के पीछे शोधार्थी का मानना है कि पूर्वाग्रह आत्म–विश्वास को भी सकारात्मक अथवा नकारात्मक रूप से प्रभावित करती है।

समायोजन व्यक्ति का व्यक्तित्व आधारित वैसा गुण होता है, जिसके द्वारा व्यक्ति अपने जीवन में वातावरण के साथ अनुकूल ढंग से अपना समायोजन कर पाता है। समायोजन की विशेषता के कारण व्यक्ति अपने जीवन में उपलब्धि प्राप्त कर पाता है और लक्ष्य को प्राप्त करने में सक्षम हो पाता है।

व्यक्ति अपने व्यवहारिक क्रियाओं में वातावरण में उपस्थित उद्दीपनों के कारण जो भी परिवर्तन करता है और आनेवाली समायोजनात्मक कठिनाईयों को समाप्त करता है, उसे ही समायोजन के रूप में पहचाना जाता है।

विभिन्न शोध–विशेषज्ञों की मान्यता है कि जीवन में सफलता प्राप्त करने एवं वांछित लक्ष्य को हासिल करने में समायोजन महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

प्रस्तुत शोध में समायोजन को भी शोधार्थी द्वारा एक आश्रित चर के रूप में सम्मिलित किया गया है। इस संदर्भ में शोधार्थी का तर्क है कि, पूर्वाग्रह समायोजन की क्षमता एवं कुशलता को प्रभावित करती है जिससे व्यक्ति का जीवन समायोजित अथवा असमायोजित होता है।

शोध की सार्थकता :

प्रस्तावित यह शोध वर्त्तमान संदर्भ में काफी सार्थक प्रतीत होता है, क्योंकि आज के वैश्वीकरण के युग में प्रत्येक व्यक्ति एक–दूसरे से आगे बढ़ना चाहता है और जीवन में सफलता प्राप्त करना चाहता है। इस परिप्रेक्ष्य में मनोवैज्ञानिक कारक के रूप में मानसिक स्वास्थ्य, आत्म–विश्वास एवं समायोजन

सकारात्मक एवं प्रभावी भूमिका निभा सकता है एवं पूर्वाग्रह की अवधारणा को कम अथवा समाप्त कर सकता है।

पूर्व के अध्ययनों की समीक्षा :

प्रस्तावित इस शोध कार्य को मानक स्तर पर सम्पादित करने के लिए कुछ पूर्व के अध्ययनों का अवलोकन किया गया है।

डकिट (1992) ने पूर्वाग्रह और व्यवहार से संबंधित अध्ययन के आधार पर पाया है कि, पूर्वाग्रह की अवधारणा से व्यवहारात्मक प्रक्रिया कमजोर होती है अर्थात् पूर्वाग्रह और व्यवहार में निम्न सहसंबंध होता है।

एक अध्ययन में मेयर (2003) ने पाया है कि स्वास्थ्य एवं प्रतिबल को पूर्वाग्रह प्रभावित करता है, जबकि मजबूत प्रेरणा, पूर्वाग्रह से प्रभावित नहीं होता है।

जांग इत्यादि (2012) ने लोगों के पूर्वाग्रह, सामाजिक दूरी और मानसिक अस्वस्थता का अध्ययन किया है और निष्कर्ष के आधार पर बताया है कि लोगों में पूर्वाग्रह की भावना से सामाजिक दूरी की भावना बढ़ती और बच्चे मानसिक रूप से स्वस्थ नहीं रह पाते हैं।

चेकराउड इत्यादि (2014) ने प्रजातीय संबंध आधारित पूर्वाग्रह का तंत्रिका प्रतिभा के संबंध में अध्ययन किया है और परिणाम में पाया है कि, पूर्वाग्रह का तंत्रिका आधारित कारक मस्तिष्क के एमिंगडाला की क्रिया विधि को प्रभावित करता है।

वेंकटेश इत्यादि (2015) ने आरोप और मानसिक अस्वस्थता का शोधात्मक अध्ययन किया है और निष्कर्ष में पाया है कि, मानसिक अस्वस्थता का आरोप लगाने की प्रवृत्ति के साथ सकारात्मक सहसंबंध होता है। जबकि महिलाओं एवं उच्च आय वाले लोगों में आरोप लगाने की प्रवृत्ति उच्च रूप से पाई जाती है।

तारनी इत्यादि (2015) ने भारत में मानसिक अस्वस्थता, गरीबी और आरोप का अध्ययन किया है और परिणाम में पाया है कि, गरीबी एवं मानसिक अस्वस्थता के साथ आरोप सकारात्मक एवं उच्च रूप से संबंधित होती है। इसके अलावे उन्होंने पुरुषों की अपेक्षा महिलाओं में आरोप लगाने की प्रवृत्ति को उच्च रूप से पाया है।

बलाची (2017) ने पूर्वाग्रह, सांस्कृतिक बुद्धि एवं उद्यमिता स्तर का शोधात्मक अध्ययन किया है और परिणाम में पाया है कि पूर्वाग्रह सांस्कृतिक–बुद्धि एवं उद्यमिता स्तर को सकारात्मक रूप से प्रभावित करती है। इसके अतिरिक्त उन्होंने शैक्षिक एवं संगठनात्मक साहित्यों में पूर्वाग्रह को सहायक की भूमिका में पाया है।

पालुक इत्यादि (2020) ने पूर्वाग्रह उपाचार एवं चुनौती आधारित सर्वेक्षणात्मक अध्ययन में बताया है कि, पूर्वाग्रह एक समस्याजनक एवं चुनौतीपूर्ण अवधारणा है जो व्यक्तियों में दीर्घकालिक नकारात्मक प्रभाव डालता है।

शोध का उद्देश्यः

प्रस्तावित इस शोध का मुख्य उद्देश्य निम्नांकित है :

(i) पूर्वाग्रह, मानसिक स्वास्थ्य, आत्म–विश्वास एवं समायोजन की वैज्ञानिक अवधारणा प्रस्तुत करना,

(ii) पूर्वाग्रह, मानसिक स्वास्थ्य, आत्म–विश्वास एवं समायोजन को किस प्रकार प्रभावित करती है, इस तथ्य का खोज करना,

(iii) प्रस्तुत शोध के द्वारा पूर्वाग्रह की अवधारणा को कम करने हेतु उपचारात्मक बिन्दुओं का अन्वेषण करना,

(iv) शोध परिणाम के आधार पर संबंधित व्यक्तियों, जन–समुदायों, परामर्शदाताओं एवं अन्य लोगों को आवश्यक जानकारी प्रदान करना जिससे लोगों में पूर्वाग्रह की अवधारणा कम हो सके अथवा समाप्त हो सके।

शोध की परिकल्पनाऐं :

प्रस्तावित इस शोध में संगत परिकल्पनाओं को अनुसंधान कार्य के क्रम में निर्मित्त किया जाएगा। प्रतिदर्श के रूप में कुछ परिकल्पनाऐं निम्नांकित है :

(i) पूर्वाग्रह एवं मानसिक स्वास्थ्य के बीच नकारात्मक सहसंबंध होगा,

(ii) पूर्वाग्रह एवं आत्मविश्वास के बीच नकारात्मक सहसंबंध होगा,

(iii) व्यक्तियों के समायोजन पर पूर्वाग्रह का सार्थक प्रभाव होगा,

(iv) पूर्वाग्रह की दृष्टि से ग्रामीण–शहरी उत्तरदाताओं में सार्थक प्रभाव होगा एवं

(v) व्यक्तियों के पूर्वाग्रह की अवधारणा पर यौन संबंधी कारक का सार्थक प्रभाव होगा।

अन्य परिकल्पनाओं को शोध के क्रम में बनाया जाऐगा।

प्रविधि :

(A) प्रतिदर्श:

प्रस्तावित इस शोध कार्य में उत्तरदाता के रूप में दरभंगा (ग्रामीण एवं शहरी दोनों) जिला क्षेत्रों से कुल 300 व्यक्तियों को चुना जाऐगा। उत्तरदाताओं की आयु 25 वर्ष से लेकर 35 वर्ष औसत उम्र 30 वर्ष होगी।

उत्तरदाताओं के चयन में उद्देश्यात्मक चयन पद्धति का अवलोकन किया जाऐगा।

(B) मापनियाँ :

(i) पूर्वाग्रह मापनी :

उत्तरदाताओं में पूर्वाग्रह स्तर की जानकारी के लिए आर०एल० भारद्वाज एवं हरीश शर्मा द्वारा विकसित पूर्वाग्रह मापनी का प्रयोग किया जायेगा।

(ii) मानसिक स्वास्थ्य मापनी :

उत्तरदाताओं में मानसिक स्वास्थ्य के स्तर की जानकारी के लिए

सिंह एवं सिन्हा द्वारा विकसित मानसिक स्वास्थ्य मापनी का प्रयोग किया जायेगा। यह मापनी भारतीय संदर्भ में व्यक्तियों में मानसिक स्वास्थ्य स्तर की जानकारी हेतु काफी उपयुक्त विश्वसनीय, वैध एवं वास्तविक मापनी है।

(iii) आत्म–विश्वास मापनी :

उत्तरदाताओं में आत्म–विश्वास के स्तर की जानकारी हेतु अग्निहोत्री द्वारा विकसित आत्म–विश्वास मापनी का प्रयोग किया जायेगा। यह मापनी का प्रयोग किया जायेगा।

(iv) समायोजन आविष्कारिका :

उत्तरदाताओं में समायोजन स्तर की माप के लिए वेल समायोजन आविष्कारिका के हिन्दी रूपान्तरण (एम० शमशाद एवं के० जहाँ) का उपयोग किया जायेगा।

(v) व्यक्तिगत सूचना–प्रपत्र :

उत्तरदाताओं के संबंध में व्यक्तिगत जानकारी हेतु शोधार्थी स्वयं द्वारा विकसित व्यक्तिगत सूचना–प्रपत्र का उपयोग किया जायेगा।

प्रदत्तों का विश्लेषण :

चयनित मापनियों के द्वारा संग्रहित किये गये प्रदत्तों को उचित सांख्यिकीय विधि के आधार पर विश्लेषित किया जायेगा और समसामयिक भारतीय संदर्भ में परिणाम तैयार किया जायेगा।

कार्य योजना :

प्रस्तावित इस शोध कार्य को निम्नांकित अध्यायों में बाँटकर शोध–प्रबंध का रूप दिया जायेगा :

(i)	अध्याय– 01	:	परिचय
(ii)	अध्याय– 02	:	पूर्व के अध्ययनों की समीक्षा
(iii)	अध्याय– 03	:	उद्देश्य एवं परिकल्पना
(iv)	अध्याय– 04	:	प्रविधि
(v)	अध्याय– 05	:	परिणाम
(vi)	अध्याय– 06	:	व्याख्या एवं निष्कर्ष
(vii)	अध्याय– 07	:	सारांश

सबसे अंत में संदर्भ–सूची एवं परिशिष्ट संलग्न किया जाऐगा।

संदर्भ सूची :

1. **चेकराउड, ए०एम०, एवरेस्ट, जे०ए०सी०, व्रीज, एच० एवं व्यूस्टन, एम० (2014) :** प्रजाति संबंधित पूर्वाग्रह का तंत्रिका प्रतिभा आधारित अध्ययन, मानवीय तंत्रिका विज्ञान आधारित पत्रिका, वॉल्युम–08

2. **जांग, एल०, लिम, जे० टी०, ओ०, जूवान, ली, यांग, सी०एल०(2012):** मानसिक स्वास्थ्य पर जन पूर्वाग्रह और सामाजिक दूरी के प्रभाव का अध्ययन। उपचारात्मक औषधि और जनस्वास्थ्य आधारित शोध पत्रिका,

वॉल्युम–45(2), 90–97

3. **डकिट जे० (1992) :** पूर्वाग्रह और व्यवहार : एक पुनरावलोकन, समसामयिक मनोविज्ञान, वॉल्युम–11, 291–307

4. **तारनी, जे०, एफ०, बक्शी, पी०, नारायण, एस०, एस०, वेंकटरामन, एच०, मिश्रा, एल०, एन०, ग्रॉस, एन०, ई०, जाधव, एस० देशपांडे, एस० एवं कुलवर्ग, जे० (2015) :** भारत में मानसिक अस्वस्थता, आरोप एवं गरीबी : एक केस–नियंत्रण अध्ययन, वी० एम० जे० पत्रिका, वॉल्युम 5(2)

5. **पालुक, ई०एल०, रोनी, पी०, क्लार्क, सी०एस०, एवं ग्रीन, डी०पी० (2020) :** पूर्वाग्रह निराकरण : विकास और चुनौतियाँ, मनोविज्ञान आधारित वार्षिक रिव्यू : वॉल्युम–72, 533–560

6. **बलाची, ए० (2017) :** सांस्कृतिक बुद्धि, पूर्वाग्रह एवं उद्यमिता के स्तर के बीच संबंधात्मक अध्ययन, प्रारंभिक शिक्षा आधारित अन्तर्राष्ट्रीय इलेक्ट्रॉनिक पत्रिका, वॉल्युम–9(3), 645–666

7. **मेयर, आई०, एच० (2003) :** प्रतिबल के रूप में पूर्वाग्रह : अवधारणात्मक एवं प्रेरणात्मक समस्याऐं, जन–स्वास्थ्य आधारित पत्रिका, वॉल्युम–93(2), 262–265

8. **वेंकटेश, बी०टी०, एन्ड्रूज, टी०, माया, एस०, सिंह, एम० एवं पारसैकर, एस० (2015)** : आरोप का प्रत्यक्षीकरण और मानसिक अस्वस्थता, पारिवारिक औषधि और प्राथमिक देख–रेख आधारित शोध पत्रिका, वॉल्युम 4(3), 449–453

शोध निदेशक का हस्ताक्षर **शोधार्थी का हस्ताक्षर**